आध्यत्मिक गणित समिका

वो = तुम = मैं

पृथ्वी में जीवन की असीम सम्भावना को दृष्टिगत करते हुए परमपिता परमेश्वर (सृष्टि के रचनाकार) ने अनन्त स्वरूपों में जीव–जन्तु की रचना कर पृथ्वी को भूलोक (उत्पत्ति लोक) की संज्ञा प्रदान कर अलंकृत किया है। जहाँ स्वयं देवाधिदेव सृष्टि के रचनाकार अवतरण के लिए गणित करते रहते है। जिनके अनेकानेक अवतरण कथाएँ प्रमाणन में पढ़ी एवं पढायी जाती है। इन अनन्त स्वरूपों एक स्वरूप मानव है। यह मानव सभी समस्त अनन्त जीवों में बुद्धि ज्ञान बल मे स्पष्ट वाक शक्तिमय सामाजिक प्राणी के रूप में अपना स्थान स्थापित कर चराचर जगत में थल, जल एवं नभ में पाए जाने वाले सभी प्रत्यक्ष –अप्रत्यक्ष, भाशी–अभाशी, दृश्य–अदृश्य, सुक्ष्म–असुक्ष्म स्वरूपों में पाये जाने वाले जीव,–जन्तु, तत्वों वनस्पति, आकार – प्रकार के प्रतीकात्मक रचनाओं संरचनों को संज्ञा (नाम) प्रदान करने अग्रसर होने के तारतम्य में अपने रचनाकार का भी नामकरण करने की ओर अग्रसर होने लगा। विकास क्रम में भौगालिक, सामाजिक एवं राजनैतिक संदर्भ में विभिन्नताओं एवं जटिलताओं का जाल सा हो गया है। हर एक नाम देने वालों ने अपना– अपना रचनाकार अलग–अलग सिद्ध करने साथ एक–दुसरे के इस कदर विरोधी होने में लगा हुआ है कि स्वयं मानव मानव जाति को नष्ट करने आमदा हो रहा है। जबकि सभी नाम एक ही परमपिता के पर्यायवाची ही है। जिसका गणित प्रमाण समिका यथा अवलोकित करें।

हम जानते है– $-(A*B) = -(B*A)$ ------ गुणा का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A^2 - AB = B^2 - B^2 - BA$ ------ योज्य प्रतिलोम का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) = B^2 - B(B+A)$

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) = B^2 - B(A+B)$ ..... योग का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow A^2 - A(A+B) + (\frac{A+B}{2})^2 = B^2 - B(A+B) + (\frac{A+B}{2})^2$

------ दोनों पक्ष में तुल्य राशि $(\frac{A+B}{2})^2$ का योग करने का नियम•

$\Rightarrow (A - \frac{A+B}{2})^2 = (B - \frac{A+B}{2})^2$ ------ द्विपद का वर्ग प्रमेय से•

$\Rightarrow A - \frac{A+B}{2} = B - \frac{A+B}{2}$ ------ तुल्य घात का विलोपन से•

$\Rightarrow A = B$ ------ तुल्य राशिमान $\left(-\frac{A+B}{2}\right)$ का दोनों पक्ष में विलोपन से• सिद्ध

A और B के अलग–अलग संखात्मक मानों के लिए उक्त समीकरण को प्रतिरूपित या सिद्ध किया जा सकता है।

यथा $13 = 17$ को प्रतिरूपित या सिद्ध करना–

$-(13*17) = -(17*13)$ ------ गुणा का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13^2 - 13*17 = 17^2 - 17^2 - 17*13$ ------ योज्य प्रतिलोम का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) = 17^2 - 17(17+13)$

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) = 17^2 - 17(13+17)$------ योग का क्रमविनिमय का नियम से•

$\Rightarrow 13^2 - 13(13+17) + (\frac{13+17}{2})^2 = 17^2 - 17(13+17) + (\frac{13+17}{2})^2$

------ दोनों पक्ष में तुल्य राशि $(\frac{13+17}{2})^2$ का योग करने का नियम•

$\Rightarrow (13 - \frac{13+17}{2})^2 = (17 - \frac{13+17}{2})^2$ ------ द्विपद का वर्ग प्रमेय से•

$\Rightarrow 13 - \frac{13+17}{2} = 17 - \frac{13+17}{2}$ ------ तुल्य घात का विलोपन से•

$\Rightarrow 13 = 17$ ------ तुल्य राशिमान $\left(-\frac{13+17}{2}\right)$ का दोनों पक्ष में विलोपन से• सिद्ध

ऐसा प्रतिरूपण या सिद्ध करने का भाव मात्र महाभारत रणभूमि कुरूक्षेत्र में अर्जुन के युद्ध के प्रति निराशा का भाव जागृत होने पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये महान आध्यात्मिक ज्ञान ग्रंथ गीता के –

""अध्याय 5 श्लोक 18 **विद्याविनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।**

भावार्थ – वे ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी कुत्ते और चाण्डाल में समदर्शी ही होते है।

श्लोक 19 **इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्येस्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः।।**

भावार्थ – जिसका मन सम भाव में स्थित है, उनके द्वारा इस जीवित अवस्था में ही सम्पूर्ण संसार जीत लिया गया है, क्योंकि सच्चिदानन्द धन परमात्मा निर्दोष ओ सम है, इससे वे सच्चिदानन्द धन परमात्मा में ही स्थित है।

अध्याय 6 श्लोक 32 **आत्मापम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा दुखं स योगी परमो मतः।।**

भावार्थ – हे अर्जुन ! जो योगी अपनी भाँति‡ सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख को भी सब में सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।" उदृत है।"

उक्त आध्यात्मिक गणित समीकरण के प्रतिभाव उदृत गीता ज्ञान का भावार्थ – हमें विभेद नीति से हटकर वैसद्धव कुटुम्बकम् के मूल भावना को आत्मसात करते हुए इस भूलोक में विकसित सभी धर्म, पंथ जाति में समदर्शी होकर सर्व–धर्म समभाव के प्रतीक हमारा एक ही धर्ग मानव–धर्म एवं एक ही जाति मानव–जाति को आत्मसात करें। और विश्व कल्याण हेतू

ऊँ श्री हरि • अल्लाह• विठठल–विठृठल• साहेब• कृष्ण• साईराम••

श्री बूढ़ादेव• प्रभु यीशु• बुद्धम• महावीराय • झूलेलाल• वाहेगुरू • सतनाम् ••

को अभिमंत्र स्वरूप चिंतन मनन करें।

हो एक ही आगाज हमारा– पूरी वसुन्धरा, परिवार हमारा•

विश्वशांति• विश्वशांति• विश्वशांति•

एक ही धर्म– मानव धर्म• एव ही सेवा – मानव सेवा•

जय सेवा• जय सेवा• जय.सेवा•

‡ जैसे मनुष्य अपने मस्तक,हाथ पैर, और गुदादि के साथ ब्राह्मण, क्षत्रिय शूद्र और म्लेच्छादिकों का–सा बर्ताव करता हुआ भी उनमें आत्म भाव अर्थात् अपनापन समान होने से सुख और दुख को समान ही देखता है, वैसे ही सब भूतों में देखना "अपनी भाँति" सम देखना है।

.....आध्यात्मिक गणित....

पंचराम केशरिया *9685267495*